उत्तर प्रदेश में माध्यमिक स्तर की हिंदी पाठ्यपुस्तकों में निहित मानव-मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

विभा सिंह पटेल*

साहित्य मानव की सृष्टि है लेकिन वह मानव तक सीमित नहीं अपितु वह शेष जगत के साथ मानव के रागात्मक संबंध को पुष्ट करता है। आज संपूर्ण भारतवर्ष एवं विश्व स्तर पर मूल्य शिक्षा की बात ज़ोर-शोर से कही जा रही है। साहित्य के माध्यम से मूल्यों की शिक्षा अधिक प्रभावकारी और स्थायी रूप से दी जा सकती है। हिंदी की पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से हिंदी साहित्य की विविध विधाओं द्वारा विद्यार्थियों में मानव-मूल्यों का विकास किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य विभिन्न शिक्षा परिषदों की कक्षा 10 की हिंदी पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु का विश्लेषण करना तदोपरांत उनमें विद्यमान मानव-मूल्यों की पहचान कर विभिन्न प्रकार की परिषदों की पाठ्यपुस्तकों में विद्यमान मानव-मूल्यों की तुलना करना है। मानव-मूल्यों के विकास में हिंदी गद्य पाठ्यपुस्तकों की अहम भूमिका होती है। पाठ्यपुस्तकों के संपादन में विभिन्न परिषदों के अपने-अपने दृष्टिकोण होते हैं फिर भी उन्हें एक सर्वमान्य दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए अनुसंधान कार्य कर निष्कर्ष एवं सुझाव दिए गए हैं।

पृष्ठभूमि

वर्तमान समाज में मनुष्य में नैतिक और मानवीय संवेदनाएँ प्रतिदिन घटती जा रही हैं और इसका स्थान स्वार्थपरता लेती जा रही है। अत: यह ज़रूरी है कि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था को मूल्यपरक बनाया जाए। इसके लिए पाठ्यचर्या इस प्रकार निर्मित होनी चाहिए कि वह मानव-मूल्यों के विकास में सहायक हो। साहित्य के माध्यम से मनुष्य अपनी मनुष्यता के चरितार्थ करता है। साहित्य मानव की सृष्टि है लेकिन वह

* *शोध छात्रा*, शिक्षा संकाय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

मानव तक सीमित नहीं अपितु वह शेष जगत के साथ मानव के रागात्मक संबंध को पुष्ट करता है। साहित्य मनुष्य को उन मूल्यों की प्रेरणा देता है जिनसे उनका जीवन सार्थक व सफल हो।

विभिन्न पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से मानव-मूल्यों का विकास किया जा सकता है। हिंदी की पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से हिंदी साहित्य की विविध विधाओं द्वारा विद्यार्थियों में मानव-मूल्यों का विकास किया जाता है। मानव-मूल्य की निहितता के दृष्टिकोण से माध्यमिक स्तर की विभिन्न परिषदों की पाठ्यपुस्तक में क्या वस्तुस्थिति है, इसका अध्ययन करना एवं परिणामस्वरूप प्राप्त संकेतों के आधार पर सुझाव देना उचित प्रतीत होता है।

अध्ययन की आवश्यकता

आज संपूर्ण भारतवर्ष एवं विश्व स्तर पर मूल्य शिक्षा की बात ज़ोर-शोर से कही जा रही है। साहित्य के माध्यम से मूल्यों की शिक्षा अधिक प्रभावकारी और स्थायी रूप से दी जा सकती है। हिंदी साहित्य के माध्यम से मात्र हिंदी भाषा का विकास ही नहीं होता वरन् यह बालकों में मूल्यों के विकास में सहायक भी है। अत: विभिन्न परिषदों द्वारा अपनाई गई पाठ्यपुस्तकों में मानव-मूल्यों की निहितता कितनी है तथा कौन-सी परिषद् सर्वोत्तम है, यह जानना अत्यंत आवश्यक है।

समस्या कथन

उत्तर प्रदेश में माध्यमिक स्तर की प्रचलित हिंदी पाठ्यपुस्तकों में निहित मानव-मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

शीर्षक में प्रयुक्त शब्दों की क्रियात्मक परिभाषा

उत्तर प्रदेश – भारतवर्ष का एक प्रमुख प्रांत।

माध्यमिक स्तर की विभिन्न शिक्षा परिषदें – यहाँ पर उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् आईसीएसई, सीबीएसई को सम्मिलित किया गया है।

पाठ्यपुस्तक – ऐसी पुस्तक, जो किसी विषय-विशेष के अध्ययन के लिए प्रयोग की जाती है, उसे उस विषय की पाठ्यपुस्तक कहते हैं।

मानव-मूल्य – कुछ निश्चित जीवन आदर्शों को मानदंड के रूप में लिया जाता है और इन्हीं मानदंडों या कसौटियों को हम मानव-मूल्य कहते हैं।

तुलनात्मक अध्ययन – विविध-परिषदों की हिंदी गद्य की पाठ्यपुस्तकों पर विचारपूर्वक चिंतन करने के बाद विगत तथ्यों की सूक्ष्मता के साथ तुलना करना ही तुलनात्मक अध्ययन है।

अध्ययन के उद्देश्य – इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

- विभिन्न शिक्षा परिषदों की कक्षा 10 की हिंदी पाठ्यवस्तु की विषयवस्तु का विश्लेषण करना।
- उपरोक्त विश्लेषण के उपरांत उनमें विद्यमान मानव-मूल्यों की पहचान करना।
- विभिन्न प्रकार की परिषदों की कक्षा 10 की हिंदी पाठ्यपुस्तकों में विद्यमान मानव-मूल्यों की तुलना करना।

परिसीमन

1. अध्ययन में सम्मिलित की गई तीनों परिषदों के केवल हिंदी गद्य पाठों को शामिल किया गया है।

2. दसवीं कक्षा में पढ़ाए जाने वाले संस्कृत, काव्य खंड तथा पूरक हिंदी गद्य पाठ्यपुस्तक को शामिल नहीं किया गया है।
3. एक ही पाठ में कई मानव-मूल्य एक से पाए गए हैं, अत: जो मानव-मूल्य प्रमुख लगे उन्हीं को अध्ययन में लिया गया है। गौण मानव-मूल्य को अध्ययन से बाहर रखा गया है।
4. इस बारे में कुछ कहना कठिन है कि किस मानव-मूल्य को पाठ्यपुस्तक में कितना महत्त्व दिया जाए क्योंकि यह अत्यंत विवाद का विषय है।
5. मानव-मूल्यों के वर्गीकरण पर आम सहमति नहीं है, मूल्यों का वर्गीकरण कई अन्य तरीकों से भी किया जा सकता है।
6. उन्हीं मानव-मूल्यों को प्रमुखता दी गई है, जो अपेक्षातया अन्य मानव-मूल्यों की तुलना में ज़्यादा परिलक्षित होते हैं। निष्कर्ष के संपादन में गौण मानव-मूल्यों की गिनती एवं तुलना नहीं की गई है।
7. केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् की दसवीं कक्षा में हिंदी की पाठ्यपुस्तक में अब वे पाठ्यपुस्तकें चलती हैं जिसमें 'अ' पाठ्यपुस्तक को लिया गया है।

अनुसंधान विधि – यह अध्ययन विषयवस्तु विश्लेषणात्मक है। इसके अंतर्गत विभिन्न पाठ्यपुस्तकों में विद्यमान मानव-मूल्यों के विश्लेषण के उपरांत पहचान की गई है एवं तदोपरांत तुलना की गई है।

इस अध्ययन में निम्नलिखित छह मानव-मूल्यों को ही चिन्हित किया गया है–

- शारीरिक मानव-मूल्य
- आर्थिक मानव-मूल्य
- सामाजिक मानव-मूल्य
- मनोवैज्ञनिक मानव-मूल्य
- बौद्धिक मानव-मूल्य
- आध्यात्मिक मानव-मूल्य

इन्हीं छह मानवीय मूल्यों के आधार पर अध्ययन के अंतर्गत रखे गए पुस्तकों के सभी पाठों का मूल्याँकन किया गया तथा प्रधान एवं गौण मूल्यों को पाठों की विषयवस्तु के आधार पर संग्रहित किया गया है जो पाठ्यक्रमानुसार आगे दिया गया है।

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् की हिंदी की पाठ्यपुस्तक (दसवीं कक्षा) में मानव-मूल्य

उपर्युक्त परिषद् के अंतर्गत हिंदी की पाठ्यपुस्तक (दसवीं कक्षा) के रूप में 'क्षितिज भाग – 2' नामक पाठ्यपुस्तक स्वीकृत है। इसके गद्य खंड में दिए गए पाठों का विवरण निम्नलिखित है –

सारणी 1

गद्य खंड में दिए गए पाठों का विवरण

पाठ क्रमाँक	पाठ का नाम	विधा
10.	नेताजी का चश्मा	कहानी
11.	बालगोबिन भगत	रेखाचित्र

12.	लखनवी अंदाज़	कहानी
13.	मानवीय करुणा की दिव्य चमक	संस्मरण
14.	एक कहानी यह भी	आत्मकथ्य
15.	स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन	निबंध
16.	नौबतखाने में इबादत	व्यक्ति-चित्र
17.	संस्कृति	निबंध

पाठों में मानव-मूल्यों का रेखांकन

पाठ 10 'नेता जी का चश्मा' — स्वयं प्रकाश

प्रस्तुत कहानी 'नेता जी का चश्मा' स्वयं प्रकाश द्वारा लिखित है। इस कहानी में लेखक ने कैप्टन चश्मे वाले के माध्यम से देशभक्ति को दर्शाया है और साथ ही साथ यह दिखाया है कि हर कोई अपने-अपने तरीके से भारत के निर्माण में सहयोग करता है तथा इसमें बड़ों से लेकर बच्चे तक शामिल हैं। इस पाठ में देशभक्ति तथा सहयोग के माध्यम से सामाजिक मानव-मूल्यों की झलक मिलती है।

पाठ 11 'बालगोबिन भगत' — रामवृक्ष बेनीपुरी

प्रस्तुत रेखाचित्र 'बालगोबिन भगत' रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा लिखित है। इस रेखाचित्र के माध्यम से लेखक ने बालगोबिन भगत का एक ऐसी विलक्षण चित्र उद्घाटित किया है जो लोक धर्म तथा सामूहिक चेतना का प्रतीक है। इसके साथ ही साथ संयासी होने की सामान्य धारणा का खंडन किया तथा इसमें यह दिखाया गया है कि संयास का आधार मनुष्य के मानवीय सरोकार होते हैं। इस रेखाचित्र में बालगोबिन भगत के माध्यम से सामाजिक मानव-मूल्यों की शिक्षा मिलती है।

पाठ 12 'लखनवी अंदाज़' — यशपाल

प्रस्तुत कहानी 'यशपाल' द्वारा लिखित है। लखनवी अंदाज़ के माध्यम से लेखक ने भारत में परजीवी संस्कृति पर व्यंग्य किया है तथा पतनशील सामंती वर्ग पर कटाक्ष किया है जो वास्तविकता से बेखबर एक बनावटी जीवन शैली के आदी हैं। इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय संस्कृति पर ज़ोर देते हुए सामाजिक मानव-मूल्यों को दर्शाया गया है।

पाठ 13 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' — सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

यह संस्मरण सर्वेश्वर दयाल सक्सेना द्वारा लिखा गया है। इस संस्मरण के माध्यम से दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों की भारत की आध्यात्मिक विशेषता, फ़ादर कामिल बुल्के के माध्यम से बतायी गई है तथा बुल्के के स्वभाव को प्रकाशित कर सत्य, करुणा, शांति, शील इत्यादि आध्यात्मिक मानव-मूल्यों की शिक्षा प्रदान की गई है। इसके साथ ही साथ अंशत: मनोवैज्ञानिक मानव-मूल्यों की शिक्षा भी दी गई है।

पाठ 14 'एक कहानी यह भी' — मन्नू भंडारी

अपनी आत्मकथा, 'एक कहानी यह भी' के माध्यम से मन्नू भंडारी ने दिखाया है कि किस प्रकार एक साधारण लड़की, असाधारण व्यक्तित्व प्राप्त करती

है तथा आज़ादी की लड़ाई में उसका उत्साह, ओज, संगठन-क्षमता और विरोध करने का तरीका देखते ही बनता है। इस पाठ के माध्यम से विद्यार्थियों को सामाजिक मानव-मूल्यों की शिक्षा प्रदान की जा सकती है।

पाठ 15 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' — महावीर प्रसाद द्विवेदी

प्रस्तुत निबंध महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित 'महिला मोद' नामक पुस्तक में शामिल है। इस निबंध के माध्यम से स्त्री-शिक्षा के विरोध में दी गई दलीलों का खंडन करते हुए स्त्री-शिक्षा के सामाजिक मूल्य की स्थापना की गई है तथा स्त्री-शिक्षा को सामाजिक विकास में अनिवार्य तत्व माना गया है, अत: यहाँ सामाजिक मानव-मूल्य परिलक्षित होता है।

पाठ 16 'नौबतखाने में इबादत' — यतींद्र मिश्र

'नौबतखाने में इबादत' प्रसिद्ध शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ पर यतींद्र मिश्र द्वारा रोचक शैली में लिखा गया व्यक्ति-चित्र है। इस व्यक्ति चित्र के माध्यम से यतींद्र मिश्र ने बिस्मिल्ला खाँ का परिचय तो दिया ही है, साथ ही उनकी रुचियों, उनके अंतर्मन की बुनावट, संगीत की साधना और लगन को भी व्यक्त किया है। यहाँ पर संगीत का परिचय आराधना के रूप में दिया गया है तथा इसके लिए गुरु-शिष्य की परंपरा, पूर्ण तन्मयता, धैर्य तथा मंथन को ज़रूरी बताया है। इस पाठ के माध्यम से सामाजिक मानव-मूल्यों की शिक्षा तथा अंशत: संगीत को अराधना के रूप में आध्यात्मिक मानव-मूल्य की शिक्षा गई है।

पाठ 17 'संस्कृति' — भदंत आनंद कौसल्यायन

'संस्कृति' निबंध भदंत आनंद कौसल्यायन द्वारा लिखित है। इस निबंध के माध्यम से हमें सभ्यता और संस्कृति से जुड़े अनेक जटिल प्रश्नों से टकराने की प्रेरणा मिलती है। इस पाठ के माध्यम से मानव समाज के लिए कल्याणकारी भावना के रूप में संस्कृति और सभ्यता को चित्रित किया गया है। इसके माध्यम से बौद्धिक मानव-मूल्यों की शिक्षा दी गई है, क्योंकि संस्कृति और सभ्यता का संबंध कल्याण से है जिसका निर्धारण विवेक तथा औचित्य निर्धारण द्वारा किया जाता है।

सारणी 2
पाठानुसार विभिन्न मानव-मूल्यों की स्थिति

क्रमाँक	मानव-मूल्य	पाठ संख्या	पाठ संख्या का योग	प्रतिशत
1.	शारीरिक मानव-मूल्य	0	0	0%
2.	आर्थिक मानव-मूल्य	0	0	0%
3.	सामाजिक मानव-मूल्य	10,11,12,14,15, 16	6	75%
4.	मनोवैज्ञानिक मानव-मूल्य	0	0	0%

5.	बौद्धिक मानव-मूल्य	17	1	12.5%
6.	आध्यात्मिक मानव-मूल्य	13	1	12.5%
			8	**100%**

भारतीय प्रमाण-पत्र माध्यमिक शिक्षा परिषद के हिंदी गद्य की पाठ्यपुस्तक (दसवीं कक्षा) में मानव-मूल्य

इसके अंतर्गत हिंदी की पाठ्यपुस्तक (दसवीं कक्षा) के रूप में 'गद्य संकलन' नामक पाठ्यपुस्तक स्वीकृत है। इसके गद्य संकलन में दिए गए 15 पाठों में से 7 पाठों का विवरण निम्नलिखित है –

सारणी 3
गद्य खंड में दिए गए पाठों का विवरण

क्रमांक	पाठ का नाम	विधा
1.	परीक्षा	कहानी
2.	ताई	कहानी
3.	उसकी माँ	कहानी
4.	अकेली	कहानी
5.	चप्पल	कहानी
6.	चीफ़ की दावत	कहानी
7.	ममता	कहानी

पाठों में मानव-मूल्यों का रेखांकन

पाठ 1 'परीक्षा' — प्रेमचंद

'परीक्षा' नामक कहानी 'कथा सम्राट' प्रेमचंद द्वारा लिखित है। इस कहानी के माध्यम से व्यक्ति की सच्ची परीक्षा उसके हृदय में स्थित दया, आत्मबल और परमार्थ भाव की उच्चता के संदर्भ में करवाकर लेखक ने सद्गुणों की प्रतिष्ठा की है। सरदार सुजान सिंह द्वारा पंडित जानकीनाथ को दीवान नियुक्त करना इन्हीं गुणों के महत्त्व को स्थापित करता है साथ ही दया और धर्म के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति को दीवान का पद देकर आंशिक रूप से आध्यामिक मानव-मूल्य की शिक्षा प्रदान की गई है। इस पाठ में मुख्यत: सामाजिक मानव-मूल्य की शिक्षा दी गई है।

पाठ 2 'ताई' — विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक'

'ताई' विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' द्वारा लिखित बहुचर्चित व प्रशंसित कहानी है। 'ताई' कहानी के माध्यम से ताई के चरित्र में विशेष उलझनें पैदा करने तथा उससे विशेष दिशा की ओर निर्दिष्ट करने वाली परिस्थितियों के चित्रण को अधिक महत्त्व दिया गया

है तथा रामेश्वरी के रूप में 'कौशिक' ने मातृत्व भाव से भर उठने वाली नि:संतान ताई का जीवंत चित्रण किया है। इसके माध्यम से पारिवारिक जीवन जैसे सामाजिक मानव-मूल्यों की स्थापना की है।

पाठ 3 'उसकी माँ' — पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'

'उसकी माँ' नामक कहानी पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' द्वारा लिखित है। इस कहानी के माध्यम से देश-प्रेम की भावना का अत्यंत मार्मिक व क्रांतिकारी भाव चित्रित किया गया है। इसमें दर्शाया गया है कि किस प्रकार भारत माता को स्वतंत्र कराने के लिए 'लाल' जैसे न जाने कितने क्रांतिकारी फाँसी के तख्ते पर झूल गए होंगे। न जाने कितनी माताएँ ऐसी रही होंगी जो 'उसकी माँ' की तरह कलेजे पर पत्थर रखकर अपने पुत्र को फाँसी लगने की सूचनाएँ पाते ही दम तोड़ गईं। इस कहानी के माध्यम से राष्ट्रधर्म, धैर्य, शौर्य, त्याग जैसे सामाजिक मानव-मूल्यों की शिक्षा दी गई है।

पाठ 4 'अकेली' — मन्नू भंडारी

'अकेली' शीर्षक कहानी मन्नू भंडारी की बहुचर्चित मनोवैज्ञानिक कहानी है जिसमें एक अकेली नारी के मानसिक संसार व सामाजिक व्यवहार का हृदयस्पर्शी चित्रण हुआ है। इस कहानी में सोमा बुआ के रूप में एक परित्यक्ता का वर्णन हुआ है जिसका पति, पुत्र की मृत्यु के बाद संन्यासी होकर हरिद्वार जा बैठता है और वर्ष में केवल एक माह के लिए घर आता है। इस एक माह में सोमा को मानसिक उत्पीड़न सहना पड़ता है, फिर भी वह अपना जीवन आस-पास की दुनिया में लोक-हित के कार्यों में व्यस्त करती जाती है। इस पाठ के माध्यम से सामाजिक मानव-मूल्यों की शिक्षा दी गई है तथा मनोवैज्ञानिक मानव-मूल्य अंशत: परिलक्षित होता है।

पाठ 5 'चप्पल' — कमलेश्वर

प्रस्तुत कहानी कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियों में से एक है। इस कहानी के माध्यम से मेडिकल इंस्टीट्यूट में मरीजों की पीड़ा तथा उनसे लगाव व करुणा जैसे सामाजिक और आध्यात्मिक मानव-मूल्यों की शिक्षा दी गई है। मुख्यत: सामाजिक मानव-मूल्य की शिक्षा इस पाठ द्वारा प्रदान की गई है।

पाठ 6 'चीफ़ की दावत' — भीष्म साहनी

'चीफ़ की दावत' भीष्म साहनी की अत्यंत चर्चित कहानी है। इस कहानी के माध्यम से वर्तमान सामाजिक जीवन की मूल्यहीनता व भ्रष्ट आचरण को दिखाया गया है। इस कहानी में दिखाया गया है कि लोग अपनी पदोन्नति के लिए क्या-क्या तरीके अपनाते हैं तथा अपने अधिकारियों को प्रसन्न करके ऊपर उठने की प्रवृत्ति तब से अब तक निरंतर रूप से जारी है। पदोन्नति के लिए मनुष्य अपनी माँ तक की उपेक्षा करता है परंतु वही माँ उसके अधिकारी को प्रसन्न करने का माध्यम सिद्ध होती है। यहाँ पर आर्थिक मानव-मूल्य को दर्शाया गया है तथा साथ ही साथ आंशिक रूप से सामाजिक मानव-मूल्य को भी दर्शाया गया है।

पाठ 7 'ममता' — जयशंकर प्रसाद

'ममता' जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक कहानी है। इस कहानी द्वारा एक अभावग्रस्त विधवा ब्राह्मणी के माध्यम से भारतीय

सारणी 4

पाठानुसार विभिन्न मानव-मूल्यों की स्थिति

क्रमाँक	मानव मूल्य	पाठ संख्या	पाठ संख्या का योग	प्रतिशत
1.	शारीरिक मानव-मूल्य	0	0	0%
2.	आर्थिक मानव-मूल्य	6	1	14.28%
3.	सामाजिक मानव-मूल्य	1,2,3,4,5	5	71.43%
4.	मनोवैज्ञानिक मानव-मूल्य	0	0	0%
5.	बौद्धिक मानव-मूल्य	0	0	0%
6.	आध्यात्मिक मानव-मूल्य	7	1	14.28%
			7	**100%**

संस्कृति की श्रेष्ठ साधनाओं सत्य, करुणा, संतोष, पवित्रता और 'अतिथि देवो भव:' आदर्श का निर्वाह करते हुए आध्यात्मिक मानव-मूल्यों तथा स्वाभिमानी तथा कर्तव्य पालन जैसे आंशिक रूप से सामाजिक मानव-मूल्यों की शिक्षा दी गई है।

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् की हिंदी की पाठ्यपुस्तक (दसवीं कक्षा) में मानव-मूल्य

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् के अंतर्गत 'हिंदी' की पाठ्यपुस्तक (दसवीं कक्षा) में दिए गए हिंदी गद्य पाठों का विवरण निम्नलिखित है —

पाठों में मानव-मूल्यों का रेखांकन

पाठ 1 'मित्रता' — आचार्य रामचंद्र शुक्ल

'मित्रता' नामक निबंध शुक्ल जी के प्रसिद्ध निबंध संग्रह 'चिंतामणि' से संकलित है। इस निबंध में मैत्री भाव का विश्लेषणात्मक वर्णन किया गया है तथा इस निबंध के माध्यम से अच्छे मित्र के गुण, मित्रता करने की इच्छा तथा आवश्यकता के बारे में विशद विवेचन किया गया है। इस निबंध के

सारणी 5

गद्य खंड में दिए गए पाठों का विवरण

क्रमाँक	पाठ का नाम	विधा
1.	मित्रता	निबंध
2.	ममता	कहानी
3.	क्या लिखूँ	निबंध
4.	भारतीय संस्कृति	निबंध
5.	ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से	निबंध
6.	अजंता	निबंध
7.	पानी में चंदा और चाँद पर आदमी	निबंध

माध्यम से विद्यार्थियों की सामाजिक तथा मित्रता की मनोवैज्ञानिक ज़रूरत का भी वर्णन किया गया है। अत: इस पाठ में मुख्यत: सामाजिक मानव-मूल्यों की शिक्षा तथा गौण रूप से मनोवैज्ञानिक मानव-मूल्यों की शिक्षा प्रदान की गई है।

पाठ 2 'ममता' — जयशंकर प्रसाद

'ममता' जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक कहानी है। इस कहानी के माध्यम से एक अभावग्रस्त विधवा ब्राह्मणी के माध्यम से भारतीय संस्कृति की श्रेष्ठ साधनाओं सत्य, करुणा, संतोष, पवित्रता और 'अतिथि देवो भव:' आदर्श का निर्वाह करते हुए आध्यात्मिक मानव-मूल्यों तथा स्वाभिमान तथा कर्तव्य पालन जैसे आंशिक रूप से सामाजिक मानव-मूल्यों की शिक्षा दी गई है।

पाठ 3 'क्या लिखूँ' — पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

'क्या लिखूँ' नामक ललित निबंध पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी द्वारा लिखित है। इसमें निबंधकार ने निबंध कैसे लिखा जाता है इस पर ए. जी. गार्डिनर की उक्ति से शुरुआत करते हुए, बताया है कि अच्छे निबंध के लिए लेखक को उपयुक्त विषय का चुनाव करना चाहिए तथा इसी के साथ-साथ लेखक ने दो विषयों पर निबंध की विषय सामग्री प्रस्तुत करने के संकेत के साथ संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत भी कर दिया। इन ललित निबंध में बौद्धिक मानव-मूल्यों को दर्शाया गया है।

पाठ 4 'भारतीय संस्कृति' — डॉ. राजेंद्र प्रसाद

'भारतीय संस्कृति' निबंध नामक पाठ एक भाषण का अंश है जो डॉ. राजेंद्र प्रसाद द्वारा लिखा गया है। इस पाठ के माध्यम से अनेकता में एकता की भावना के साथ-साथ हमारे देश के नैतिक तथा आध्यात्मिक रूप को मूर्त होते दिखाया गया है तथा साथ ही साथ संयुक्त परिवार की भावना को उजागर किया गया है। अत: इस पाठ में मुख्यत: सामाजिक मूल्यों की शिक्षा दी गई है तथा गौण रूप से आर्थिक तथा आध्यात्मिक मानव-मूल्यों की भी शिक्षा प्रदान की गई है।

पाठ 5 'ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से' — रामधारी सिंह 'दिनकर'

प्रस्तुत निबंध रामधारी सिंह 'दिनकर' की 'अर्द्धनारीश्वर' पुस्तक में संकलित किया गया है। इस निबंध के माध्यम से 'दिनकर' ने ईर्ष्या से होने वाली हानियाँ तथा इसके साथ-साथ इसको सकारात्मक रूप से किस तरह लिया जा सकता है, इन सभी का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। इस पाठ के माध्यम से निर्द्वंद्वत्व, अकुंठा आदि मनोवैज्ञानिक मानव-मूल्यों को समझा जा सकता है।

पाठ 6 'अजंता' — डॉ. भगवतीशरण उपाध्याय

प्रस्तुत निबंध डॉ. भगवतीशरण उपाध्याय द्वारा लिखित पुरातत्व संबंधी लेख है। इस निबंध के माध्यम से अजंता की गुफ़ाओं की चित्रकारी और शिल्प के इतिहास एवं सौंदर्य का ही वर्णन नहीं बल्कि दर्शक के मन पर पड़ने वाले प्रभाव को भी दर्शाया गया है तथा चित्रों के माध्यम से सामाजिक मानव-मूल्यों के साथ-साथ शारीरिक मानव-मूल्यों की आवश्यकता को भी दर्शाया गया है।

सारणी 6

पाठानुसार विभिन्न मानव-मूल्यों की स्थिति

क्रमाँक	मानव-मूल्य	पाठ संख्या	पाठ संख्या का योग	प्रतिशत
1.	शारीरिक मानव-मूल्य	7	1	14.28%
2.	आर्थिक मानव-मूल्य	0	0	0%
3.	सामाजिक मानव-मूल्य	1,4,6	3	42.86%
4.	मनोवैज्ञानिक मानव-मूल्य	5	1	14.28%
5.	बौद्धिक मानव-मूल्य	3	1	14.28%
6.	आध्यात्मिक मानव-मूल्य	2	1	14.28%
			7	**100%**

पाठ 7 'पानी में चंदा और चाँद पर आदमी' — जयप्रकाश भारती

जयप्रकाश भारती द्वारा लिखित निबंध 'पानी में चंदा और चाँद पर आदमी' में निबंधकार ने चंद्रमा के विषय में प्रचलित कवि कल्पना और लोक विश्वास के साथ-साथ वैज्ञानिक सत्य का मिलान करने पर कितना अंतर दिखाई पड़ता है, इसका वर्णन किया है तथा चंद्रमा पर पहुँचना मानव की एक उपलब्धि के रूप में दर्शाया है। इसके माध्यम से शारीरिक मानव-मूल्य की शिक्षा प्रदान की गई है।

विश्लेषण एवं तुलनात्मक अध्ययन

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् की पाठ्यपुस्तक (दसवीं कक्षा) का विश्लेषण – सारणी 1 के अनुसार 'क्षितिज भाग 2' में कुल 8 गद्य पाठ संकलित हैं। इनमें 2 कहानी, 1 रेखाचित्र, 1 संस्मरण, 1 आत्मकथा, 2 निबंध तथा 1 व्यक्ति चित्र हैं। अत: कहा जा सकता है कि हिंदी-साहित्य की गद्य विधा के अनुसार पाठों का विवरण मनोवैज्ञानिक है तथा सभी विधाओं को लगभग समान महत्त्व दिया गया है।

सारणी 2 के अनुसार मानव-मूल्यों की स्थापना की दृष्टि से देखें तो इसका वितरण असमान है। इसमें शारीरिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक मानव-मूल्य का प्रतिशत शून्य है। इस पाठ्यपुस्तक में बौद्धिक तथा आध्यात्मिक मानव-मूल्य का प्रतिशत समान है, इनमें प्रत्येक का प्रतिशत 12.5 है। सामाजिक मानव-मूल्य सर्वाधिक मात्रा में इस पाठ्यपुस्तक में उपस्थित हैं जिनका प्रतिशत 75 है।

भारतीय प्रमाण-पत्र माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यपुस्तक (दसवीं कक्षा) का विश्लेषण

सारणी 3 के अनुसार 'गद्य संकलन' में कुल 15 गद्य पाठ संकलित हैं जिनमें से 7 गद्य पाठों को लिया गया है। पठन कौशल की दृष्टि से पाठों का वितरण सही है। इस पाठ्यपुस्तक के संपूर्ण पाठ 'कहानी', सारणी से स्पष्ट है कि इसमें गद्य की अन्य विधाओं को महत्त्व नहीं दिया गया है।

विभिन्न पाठों में मानव-मूल्यों का वितरण सारणी से स्पष्ट है। इसमें सर्वाधिक 71.43 प्रतिशत स्थान सामाजिक मानव-मूल्यों को दिया गया है। आर्थिक तथा आध्यात्मिक मानव-मूल्यों का प्रतिशत समान है, इनमें प्रत्येक का प्रतिशत 14.28 है। शारीरिक, बौद्धिक तथा मनोवैज्ञानिक मानव-मूल्यों को इसमें महत्त्व नहीं दिया गया है, इसका प्रतिशत शून्य है। इस प्रकार मूल्यों के वितरण में इस पाठ्यपुस्तक में भारी असमानताएँ हैं।

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् की पाठ्यपुस्तक (दसवीं कक्षा) का विश्लेषण

सारणी 5 में हिंदी में पाठों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसमें गद्य पाठों की कुल संख्या 7 है। इस पाठ्यपुस्तक में 6 निबंध तथा 1 कहानी सम्मिलित किए गए हैं। इन गद्य विधाओं के अलावा अन्य गद्य विधाओं को इसमें शामिल नहीं किया गया है।

सारणी 6 में हिंदी गद्य के पाठों में उपस्थित मानव-मूल्यों को प्रतिशत में दिया गया है। इस पाठ्यपुस्तक में सर्वाधिक महत्त्व सामाजिक मानव-मूल्य को दिया गया है जिसका प्रतिशत 42.86 है। तदंतर शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक मानव-मूल्यों का प्रतिशत समान है, इनमें प्रत्येक का प्रतिशत 14.28 है। इस पाठ्यपुस्तक में आर्थिक मानव-मूल्य को महत्त्व नहीं दिया गया है, इसकी उपस्थिति शून्य प्रतिशत के बराबर है।

तुलनात्मक अध्ययन

सारणी 7 से स्पष्ट है कि सीबीएसई, आईसीएसई एवं यूपी बोर्ड की दसवीं कक्षा की गद्य पाठ्यपुस्तकों में सर्वाधिक महत्त्व सामाजिक मानव-मूल्यों (75%, 71.43%, 42.86%) को दिया गया है। सीबीएसई में शारीरिक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक मानव-मूल्यों की उपेक्षा की गई है। बौद्धिक मानव-मूल्यों का प्रतिशत शून्य है तथा इसके साथ ही उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् की पाठ्यपुस्तक में भी आर्थिक मानव-मूल्यों की उपेक्षा की गई है।

तीनों परिषदों में सीबीएसई में सामाजिक मानव-मूल्यों का प्रतिशत सबसे अधिक है, उसके बाद क्रमश: आईसीएसई और यूपी बोर्ड है। आईसीएसई

सारणी 7

तीनों परिषदों की पाठ्यपुस्तकों में निहित मानव-मूल्यों का विवरण

क्रमाँक	मानव-मूल्य	सीबीएसई	आईसीएसई	यूपी बोर्ड
1.	शारीरिक मानव-मूल्य	0	0	0%
2.	आर्थिक मानव-मूल्य	0	14.28	0%
3.	सामाजिक मानव-मूल्य	75	71.43	42.86%
4.	मनोवैज्ञानिक मानव-मूल्य	0	0	14.28%
5.	बौद्धिक मानव-मूल्य	12.5	0	14.28%
6.	आध्यात्मिक मानव-मूल्य	12.5	14.28	14.28%

तथा यूपी बोर्ड में आध्यात्मिक मानव-मूल्यों का प्रतिशत 14.28 समान है जबकि सीबीएसई में आध्यात्मिक मानव-मूल्यों का इनकी तुलना में 12.5 प्रतिशत कम है।

सीबीएसई की पाठ्यपुस्तक में बौद्धिक तथा आध्यात्मिक मानव-मूल्यों का प्रतिशत 12.5 समान है। आईसीएसई की पाठ्यपुस्तक में आर्थिक तथा बौद्धिक मानव-मूल्यों का प्रतिशत 14.28 समान है। यूपी बोर्ड की पाठ्यपुस्तक में शारीरिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक मानव-मूल्यों का प्रतिशत 14.28 समान है।

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न परिषदों की दसवीं कक्षा की हिंदी गद्य पाठ्यपुस्तकों में निहित मानव-मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। मानव-मूल्यों के विकास में हिंदी गद्य पाठ्यपुस्तकों की अहम भूमिका होती है। पाठ्यपुस्तकों के संपादन में विभिन्न परिषदों के अपने-अपने दृष्टिकोण होते हैं फिर भी उन्हें एक सर्वमान्य दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर अनुसंधान किया गया।

निष्कर्ष एवं सुझाव

1. सारणी 1,3,5 को देखने से स्पष्ट होता है कि अध्ययन के अंतर्गत वर्णित तीनों परिषदों की पाठ्यपुस्तकों में केवल सीबीएसई की गद्य पाठ्यपुस्तकों का वितरण मनोवैज्ञानिक है लेकिन यूपी बोर्ड में गद्य की सभी विधाओं को समान महत्त्व नहीं दिया गया है।
2. आईसीएसई की गद्य पाठ्यपुस्तकों में केवल कहानियाँ संकलित हैं। इसमें अन्य गद्य विधाओं को अवश्य स्थान मिलना चाहिए।
3. उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् की पाठ्यपुस्तक में केवल कहानी तथा निबंध है। अत: यहाँ भी अन्य गद्य विधाओं को महत्त्व देना चाहिए।
4. पाठगत विशेषताओं के आधार पर तीनों परिषदों की पुस्तकों में सम्मिलित पाठ दसवीं कक्षा के स्तर के अनुकूल हैं।
5. मूल्यगत विशेषताओं के आधार पर तीनों परिषदों की पाठ्यपुस्तकों में पर्याप्त खामियाँ हैं। जो इस प्रकार हैं —
   - केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् की पाठ्यपुस्तकों में सामाजिक मानव-मूल्यों का प्रतिशत 75 है जबकि शारीरिक, आर्थिक तथा मनोवैज्ञानिक मानव-मूल्यों को महत्त्व नहीं दिया गया है, इनका प्रतिशत शून्य है।
   - आईसीएसई की पाठ्यपुस्तक में सामाजिक मानव-मूल्यों का प्रतिशत 71.43 है जबकि शारीरिक, मनोवैज्ञानिक तथा बौद्धिक मानव-मूल्यों की अवहेलना की गई है, इनका प्रतिशत शून्य है।
   - उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद् की पाठ्यपुस्तक में भी सामाजिक मूल्यों का प्रतिशत 42.86 सर्वोच्च है और आर्थिक मानव-मूल्यों को स्थान नहीं दिया गया, इनका प्रतिशत शून्य है।

- सभी परिषदों में सामाजिक मानव-मूल्यों को सर्वोच्च स्थान तथा महत्त्व दिया गया है जबकि अन्य मानव-मूल्य, सामाजिक मानव-मूल्यों की तुलना में कम हैं।

6. अंतर्राष्ट्रीय सौहार्द्र तथा पर्यावरणीय जागरूकता से संबद्ध पाठों को भी इन पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित किए जाने की आवश्यकता है।
7. मानव-मूल्यों के समान स्थापना के लिए तीनों परिषदों की पाठ्यपुस्तकों के पुनर्लेखन की आवश्यकता है।

संदर्भ

अरविंद, श्री. 1968. *भारतीय संस्कृति के आधार*. अरविंद सोसायटी, पुदुच्चेरी.

देवराज. 1950. *संस्कृत का दार्शनिक विवेचन*. प्रकाशन ब्यूरो, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश.

लाल, रमन बिहारी. 1996-1997. *शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धांत,* रस्तोगी पब्लिकेशंस, मेरठ.

राधाकृष्णन, एस. 1994. *भारतीय दर्शन*, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नयी दिल्ली.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2012. क्षितिज भाग-2, नयी दिल्ली.

सैनी, कश्मीरी लाल और किरण मेहरोत्रा. 2006. गद्य *संकलन*. ऐवरग्रीन पब्लिकेशंस (इंडिया) लिमिटेड, नयी दिल्ली.